Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 7 | JULY 2024

# रहीमदास जी के दोहों में मानवीय समस्याओं का समाधान : एक विवेचन

**डॉ. राजेन्द्र कुमार** [1]

[1] **सहायक आचार्य हिंदी (अतिथि VSY), राजकीय महाविद्यालय, पीसांगन (अजमेर).**

## ABSTRACT:

रहीम दास बड़े लोकप्रिय कवि थे। उनके नीति के दोहे तो सर्वसाधारण की जुबान पर रहते है। इनके दोहों में कोरी नीति की नीरसता नहीं है। उनमें मार्मिकता तथा कवि-हृदय की सच्ची संवेदना भी मिलती है। दैनिक जीवन की अनुभूतियो पर आधारित दृष्टान्तो के माध्यम से उनका कथन सीधे हृदय पर चोट करता है। "रहीम सतसई" पुस्तक रहीमदास जी के नीति परक व उपदेशात्मक दोहों का संग्रह है।

## KEYWORDS:

**विनम्रता (पानी), दुष्टता, सीख।**

| PAPER ACCEPTED DATE: | PAPER PUBLISHED DATE: |
|---|---|
| 29th July 2024 | 30th July 2024 |

**विषय प्रवेश:-**

रहीम मध्यकालीन सामंतवादी संस्कृति के कवि थे। रहीम का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा संपन था। वे एक ही साथ सेनापति, प्रशासक, आश्रयाता, कूटनीतिज्ञ, दानवीर, बहुभाषाविद्, कलाप्रेमी, कवि एवं विद्वान थे। रहीम सांप्रदायिक सद्भाव तथा सभी संप्रदायों के प्रति समान आदर भाव के सत्यनिष्ठ साधक थे। उनके दोंहों में नीतिपरक शिक्षा के साथ साथ जीवन की समस्याओं का हल भी मिलता है। जीवन के प्रत्येक पक्ष पर रहीमदास जी ने अपने दोहों के माध्यम से, शिक्षा देने का सफल कार्य किया है। इसी संदर्भ में प्रस्तुत है उनके द्वारा रचित दोहों में छिपी शिक्षाएँ एवं सन्देश –

रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून।

पानी गये न ऊबरे, मोती, मानुष चून॥

अर्थात - इस दोहे में रहीम ने पानी को तीन अर्थों में प्रयोग किया है। पानी का पहला अर्थ मनुष्य के संदर्भ में है - विनम्रता से। रहीम कहते है कि मनुष्य में हमेशा विनम्रता (पानी) होना चाहिये। पानी का दूसरा अर्थ- आभा, तेज या चमक से है जिसके बिना मोती का कोई मूल्य नहीं है। पानी का तीसरा अर्थ जल से है जिसे आटे (चून) से जोड़ कर दर्शाया गया है।

रहीम का कहना है कि जिस तरह आटे का अस्तित्व पानी के बिना नम नहीं हो सकता है और मोती का मूल्य उसकी आभा के बिना नहीं हो सकता है, उसी तरह मनुष्य को भी अपने व्यवहार में हमेशा पानी (विनम्रता) रखनी चाहिये जिसके बिना उसका मूल्यह्रास होता है।

चाह गई चिंता मिटी, मनुआ बेपरवाह।

जिनको कछु नहीं चाहिये, वे साहन के साह॥

अर्थात- जिन्हें कुछ नहीं चाहिये, वो राजाओ के राजा है। क्योकि उन्हें ना तो किसी चीज की चाह है, ना ही चिंता और मन तो बिल्कुल बेपरवाह है।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।

टूटे पे फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय॥

अर्थात - प्रेम को नाता नाजुक होता है इसे तोड़ना उचित नहीं है। यदि प्रेम रुपी यह धागा एक बार टूट जाये तो फिर इसे मिलाना कठिन है और यदि मिल भी जाये तो टूटे हुए धागों के बीच में गाठ पड़ जाती है।

दूसरे शब्दों में रहिमदास कहते है कि आपसी संबंधों के निर्वाह में परस्पर विनम्रता, सहनशीलता, सम्मान आवश्यक है, यदि इन सबंधों में तुच्छ विचार, अहंकार, घमंड आ जाते है तो यह संबंध नष्ट हो जाते, फिर भी लोकलाज से संबंध सामान्य हो जाये तो पूर्व की भांति उस संबंधों में परस्पर, विश्वास, स्नेह, सम्मान का अभाव ही रहेगा साथ ही उनमें मनःभेद की मनोस्थिती सदा ही रहेगी इसीलिए रहीमदास ने आपसी संबंधो के निर्वाह के लिए विनम्रता (पानी) को एक आवश्यक गुण बताया है।

रहिमन ओछे नरन सो, बैर भली न प्रीत।

चाटे स्वान के, दोऊ भांति विपरित॥

अर्थात - कम दिमाग के व्यक्तियों से ना तो प्रीति और ना ही दुश्मनी अच्छी होती है।इसी बात को रहिमदास जी ने स्पष्ट करते हुए कहा है कि कुत्ता चाहे तो व्यक्ति को काटे या चाहे दोनों को विपरित नहीं मान सकते हैं। हम ऐसे लोगों से सदैव दूरी बनाकर अपनी मर्यादा को बनाए रख सकते है।

वे रहीम नर धन्य है, पर उपकारी अंग।

बाँटनवारे को लगै, ज्यो मेंहदी को रंग॥

अर्थात - वे पुरुष धन्य है जो दूसरो का उपकार करते हैं। उन लोगों द्वारा किये गये उपकार उसी तरह फलते फूलते है जैसे कि मेंहदी बाटने वाले को-अलग से रंग लगाने की जरुरत नहीं होती है। व्यक्ति को प्रत्येक क्षण दयालुता उपकार से युक्त होने की परम आवश्यकता है।

बड़े काम ओछो करे, तो न बड़ाई होय।

ज्यों रहीम् हनुमंत को, गिरिधर कहे न कोय॥

अर्थात - जब ओछे ध्येय के लिए लोग बड़े काम करते है तो उनकी बढ़ाई नहीं होती है। इसी बात की उन्होंने स्पष्ट करने के लिऐ लिखा कि जन हनुमान जी ने धोलागिरी पर्वत को उठाया था तो उनका नाम कारन 'गिरिधर' नहीं पड़ा, क्योंकि उन्होंने पर्वतराज को क्षति पहुंचाई थी, पर जब श्री कृष्ण ने गोर्वधन पर्वत को उठाया था तो उनका नाम 'गिरिधर' पड़ा क्योकि उन्होंने सर्वजन की रक्षा हेतु पर्वत को उठाया था। श्रीकृष्ण का उद्देश्य व्यापक था, उनके कार्य सर्वजन के कल्याण के लिए निस्वार्थ भाव से प्रेरित थे।

जो रहीम ओछो बढे, तो अति ही इतराय।

प्यादे सो फरजी भयो, टेढ़ो टेढो जाय॥

अर्थात - ओछे लोग जब प्रगति करते है तो बहुत ही इतराते हैं। वैसे ही जैसे शतरंज के खेल में जब प्यादा फरजी बन जाता है तो वह टेढी चाल चलने लगता है। ओछे लोगों को रतीभर भी सफलता मिलती है तो वह बांसोबॉस कुदने लगते है, अपनी उपलब्धि पर इतराते रहते है उसका महिमा मंडन में लगे रहते है। इसीलिए ओछे लोगों की संगत से दूर ही रहना चाहिये।

अधम वचन काको फल्यों, बैठि ताड़ की छाँह।

रहिमन काम न आय है, ये नीरस जग मांह॥

अर्थात् - जिस ताड़ के पेड़ की छाया में बैठने का कोई फल नहीं मिलता है, इसी प्रकार निंदनीय वचन भी फलदायी नहीं होते है। जो मनुष्य संसार में आकर किसी के काम नहीं आते, वे मनुष्य संसार में रसहीन होते हैं। मनुष्य को अपनी मनुष्यता का परिचय सहायता सम्मान के अर्थों में प्रस्तुत करना चाहिये। यदि व्यक्ति इन गुणों से रहित है तो उसका मानव जीवन लेना निरर्थक है, वह कोरा - निंरा जानवर है।

मन मोती अरु दूध रस, इनकी सहज सुभाय।

फट जाय तो ना मिले, कोटिन करो उपाय॥

अर्थात - मन, मोती, फूल, दूध और रस जब तक सहज और सामान्य रहते हैं, तो अच्छे लगते हैं। परन्तु यदि वे एक बार फट जाये तो करोड़ो उपाय कर लो वो फिर वापिस अपने सहज रूप में नहीं आते हैं। मनुष्य का मन फट जाये तो फिर से उस वस्तु के प्रति पुनः भाव उत्पन नहीं हो सकते है। मनुष्य का मन कोमल है वह प्रेम का भूखा होता है, इसी तरह दूध का भी स्वभाव है कि वह एक बार फट गया तो उसका मूल गुण खो देगा और वह किसी काम का नहीं रहेगा।

रहिमन विपदा ही भली, जो थोरे दिन होय।

हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय॥

अर्थात - मनुष्य के जीवन के उतार चढाव में आने वाली कुछ दिनों की विपदा अच्छी होती है क्योकि इन्ही दुख: के दिनों में मनुष्य को पता चलता है कि इस मायावी संसार में कौन हमारा है और कौन पराया है। क्योकि यह संसार स्वार्थ संबंधो पर टिका है, वास्तविक मित्र का पता तो विपदा के समय ही पड़ता है।

रहिमन चुप हो बैठिये, देखि दिनन के फेर।

जब नीके एक सी, का रहीम पछितात॥

अर्थात - कार्य का एक नियत समय होने पर ही उसका परिणाम दिखाई देता है। जैसे कि उपयुक्त समय आने पर वृक्ष पर फल लगता है जब फल झड़ने का समय आ जाता है तो वह झड़ जाता है। सदा के लिऐ किसी की अवस्था एक जैसी नहीं होती है समय परिवर्तनशील है, इसे व्यक्ति को सहर्ष स्वीकार करना चाहिए इसीलिए दुख: के समय पछताना व्यर्थ है।

**सारांश:-**

खानखाना उर्फ रहीमदास के दोहे उनके जीवन के कटु अनुभवों से युक्त है। वे अनुभव जो उन्होंने स्वयं ग्रहण किये उन्हे है। जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत कर उनके पालन की राह दिखाई। रहीमदास के दोहों मे जीवन की प्रत्येक समस्या का समाधान विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। एक समझदार इसान के लिए इशारा ही पर्याप्त है, इसी का पयार्य रहीमदास जी के दोहे है।

## REFERENCES

1. रहीम के दोहे : राजेन्द्र पाण्डेय

2. मध्यकालीन कविता अवधारणा और स्वरूप : डॉ. प्रीतिसिंह , नितेश उपाध्याय

3. रहीम के दोहे : आबिद रिजवी

4. रहीम के दोहे : स्वामी आनन्द कुलश्रेष्ठ